विजया एकादशी - 27 फरवरी 2022

उच्छिष्ट गणपति साधना

एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।
तत्पुरुषाय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

किसी भी बुधवार अथवा शुभ मुहूर्त में आप प्रातः स्नान आदि नित्य क्रिया के बाद अपने पूजा स्थान में पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठें। धूप और दीप जला लें। अपने सामने पंचपात्र में जल भी ले लें। इन सभी सामग्रियों को आप चौकी पर रखें जिस पर लाल वस्त्र बिछा हुआ हो।

किसी भी साधना-पूजन की पूर्णता गुरुदेव निखिल के आशीर्वाद के बिना संभव ही नहीं है। अतः सर्वप्रथम गुरुदेव निखिल का विधिवत् पूजन सम्पन्न करें। इस हेतु गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका स्थापित कर, पंचोपचार पूजन करें।

गुरु पूजन के पश्चात् गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

गुरु पूजन के पश्चात् मूल साधना-पूजन निम्न प्रकार सम्पन्न करें -

गणपति पूजन

फिर गुरु चित्र के सामने किसी प्लेट पर कुंकुम या केसर से स्वस्तिक चिन्ह बनाकर **'उच्छिष्ट गणपति यंत्र'** को स्थापित करें।

दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें -

ॐ गजाननं भूत गणाधिसेवितं
कपित्थ जम्बू फलचारु भक्षणं।
उमासुतं शोकविनाशकारकंनमामि
विघ्नेश्वर पाद पंङ्कजम।।

फिर निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए पूजन करें -

ॐ गं मंगलमूर्तये नमः स्नानं समर्पयामि।
ॐ गं एकदन्ताय नमः तिलकं समर्पयामि।
ॐ गं सुमुखाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।
ॐ गं लम्बोदराय नमः धूपं च दीपं आघ्रापयामि, दर्शयामि।
ॐ गं विघ्ननाशाय नमः पुष्पं समर्पयामि।

इसके बाद अक्षत और कुंकुम से निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र पर चढ़ाएं -

ॐ लं नमस्ते नमः।
ॐ त्वमेव तत्वमसि।
ॐ त्वमेव केवलं कर्त्तासि।
ॐ त्वमेव केवलं भर्तासि।
ॐ त्वमेव केवलं हर्तासि।

'ॐ गणाधिपतये नमः' बोलकर एक आचमनी जल यंत्र पर चढ़ाएं। गणपति पूजन के बाद निम्न मंत्र का **'मूंगा माला'** से 5 माला जप करें -

।। ॐ गं हुं तंत्रबाधा निवारणाय श्रीं
गणेशाय स्वाहा।।

पूजन गणपति को नैवेद्य का भोग लगाकर आरती सम्पन्न करें। उसके पश्चात् यंत्र तथा माला को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें। सवा माह पश्चात् किसी भी बुधवार को यंत्र तथा माला को किसी जल सरोवर में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 490/-